License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

अय्यूब 1:1–5

अय्यूब के पास वह सब कुछ था जिसकी उसके समय के लोग आशा कर सकते थे। उसके पास एक बड़ा परिवार और कई दास थे। वह पशुधन का एक सफल किसान था। वह बहुत सम्मानित था और अपने रहने के क्षेत्र में अधिकार रखता था। वह परमेश्वर के प्रति भी पूरी तरह से समर्पित था। वह वही करता था जो परमेश्वर चाहते थे। उसने बलिदान करके दिखाया कि वह परमेश्वर का कितना सम्मान करता है। वह ऐसा तब करता था जब उसका परिवार पाप करता था। वह तब भी ऐसा करता था जब उसे लगता था कि उन्होंने पाप किया होगा। वह चाहता था कि उसके परिवार का हर व्यक्ति ऐसा जीवन जीए जो शुद्ध और स्वच्छ माना जाता था। इससे वे सभी मिलकर परमेश्वर की आराधना कर सकते थे।

अय्यूब 1:6–2:10

परमेश्वर चाहते थे कि शैतान अय्यूब पर ध्यान दे। शैतान ने अय्यूब पर आरोप लगाया। उसने अय्यूब पर आरोप लगाया कि वह केवल इसलिए परमेश्वर की सेवा करता है क्योंकि परमेश्वर ने उसे आशीष दी है। शैतान चाहता था कि परमेश्वर अय्यूब को परीक्षा में डालें। उसे यकीन था कि अय्यूब परमेश्वर के खिलाफ़ बुरी बातें बोलेगा। अगर उसे तकलीफ़ें दी जाएँ तो वह ऐसा करेगा। इसका मतलब था कि अय्यूब परमेश्वर का सम्मान करना बंद कर देगा। परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब के जीवन को छोड़कर उसके पास मौजूद सभी चीज़ों को छीनने का अधिकार दिया। पहले शैतान ने अय्यूब के पशुओं, उसके सेवकों और उसके बच्चों को छीन लिया। अय्यूब शोक करते हुए भी परमेश्वर के सामने विनम्र रहा। उसने पहचान लिया कि परमेश्वर ने उसे अच्छी चीजें पाने की अनुमति दी थीं। और उसने स्वीकार किया कि परमेश्वर ने उन्हें छीनने की भी अनुमति दी हैं। अय्यूब ने स्वीकार किया कि परमेश्वर को उसके जीवन में क्या होता है, यह तय करने का अधिकार था। उसने अपने दुख में भी परमेश्वर के नाम की प्रशंसा की। फिर शैतान ने अय्यूब का स्वास्थ्य छीन लिया। अय्यूब का शरीर दर्द में था। वह राख में बैठ गया। अपने गहन दुःख को दिखने के लिए, यह एक आम प्रथा थी। अय्यूब की पत्नी ने देखा कि वह कितना दुखी था। उसने सोचा कि उसके लिए मरना बेहतर होगा। उसने सुझाव दिया कि अय्यूब परमेश्वर के खिलाफ बोले ताकि परमेश्वर उसे मार डालें। अय्यूब ने सोचा कि यह विचार मूर्खतापूर्ण था। समझदारी का कार्य यह है कि चाहे कुछ भी हो जाए, परमेश्वर के प्रति वफादार बने रहना।

अय्यूब 2:11–3:26

अय्यूब के दोस्तों एलीपज, बिल्दद और सोपर ने उसे सांत्वना देने के लिए उससे मुलाकात की। इन लोगों ने अय्यूब के दुख में उसका साथ दिया। उन्होंने पहचाना कि अय्यूब कितनी भयानक पीड़ा में था। उन्होंने कई ऐसे काम किए जो उस समय शोक मनाने वाले लोगों के लिए आम बात थी। उन्होंने सात दिनों तक चुप रहकर अय्यूब के प्रति अपना सम्मान भी दिखाया। वे पहले अय्यूब के बोलने का इंतज़ार कर रहे थे। उसका भाषण एक लंबी कविता के रूप में दर्ज किया गया है। अय्यूब ने बताया कि उसका जीवन कितना दुखद और कड़वा हो गया था। उसके पास कोई शांति या आराम नहीं था। उसने कहा कि भला होता यदि वह पैदा ही नहीं हुआ होता। अय्यूब ने सोचा कि परमेश्वर उन लोगों को क्यों जीने देते हैं जो दुःख-तकलीफें झेल रहे थे।

अय्यूब 4:1–31:40

एलीपज और बिल्दद ने तीन-तीन बार भाषण दिए। सोपर ने दो बार भाषण दिया। उनके सभी भाषण लंबे कविताओं के रूप में दर्ज हैं।
एलीपज, बिल्दद और सोफर ने समझाया कि उन्हें क्यों लगता है कि अय्यूब को पीड़ा हो रही है। एलीपज ने अपनी ज़िंदगी में देखा था कि मुसीबतें मूर्ख लोगों पर ही आती हैं। पीड़ा उन्हें उनके पापों से सिखाने और सजा देने का तरीका था। एलीपज का मानना था कि यह दुनिया का काम करने का एक तरीका था। उसे विश्वास था कि यही अय्यूब के साथ भी हो रहा था। बिल्दद ने देखा था कि परमेश्वर उन लोगों के खिलाफ न्याय नहीं लाते जिन्होंने पाप नहीं किए। यह एक सबक था, जो लोग सैकड़ों सालों से सिखाते आ रहे थे। बिल्दद का मानना था कि यह दुनिया का काम करने का एक तरीका था। इसलिए उसने सोचा कि अय्यूब और उसके परिवार को उनके पापों के लिए सजा दी जा रही थी। सोपर को यकीन था कि अधर्मी लोग हमेशा सजा पाते हैं। उसका मानना था कि दुनिया में हमेशा से चीजें ऐसी ही होती आ रही हैं। उसे पूरा यकीन था कि परमेश्वर अय्यूब के पापों के कारण उस पर न्याय ला रहे थे। अय्यूब ने हर बार एलीपज, बिल्दद और सोपर की बातों का प्रतिउत्तर दिया। अय्यूब दुखी और क्रोधित था क्योंकि उसके दोस्तों ने ऐसी बातें कहीं जो मददगार नहीं थीं। उनकी कही गई बहुत सी बातें सच थीं। लेकिन जीवन में जो उदाहरण उन्होंने देखा था वह अय्यूब के मामले में लागू नहीं होता था। अय्यूब ने गुप्त रूप से पाप नहीं किया था। अय्यूब यह दावा नहीं करता कि उसने कभी पाप नहीं किया। लेकिन वह जानता था कि परमेश्वर उसे उसके पापों के लिए सजा नहीं दे रहे थे। अय्यूब जानता था कि उसने वैसा ही जीवन जिया जैसा परमेश्वर चाहते थे कि लोग जिएं। उसके दोस्त उसे नहीं

समझते थे। उन्होंने उस पर झूठा आरोप लगाया। अय्यूब को विश्वास था कि परमेश्वर उसे समझते है। अय्यूब को विश्वास था कि परमेश्वर जानते है कि उसने कोई गुप्त पाप नहीं किया है। अय्यूब चाहता था कि परमेश्वर उसे समझाए कि उसका जीवन इतना कठिन क्यों हो गया है। अय्यूब परमेश्वर के कार्यों के द्वारा उलझन में पड़ा था और उन पर क्रोधित था। लेकिन अय्यूब ने परमेश्वर के प्रति सम्मान बनाए रखा और बुराई से बचता रहा। उसने बहुत कष्ट में भी ऐसा ही किया। इससे पता चलता है कि अय्यूब में बुद्धि और समझ थी।

अय्यूब 32:1–37:24

एलीहू अय्यूब के दूसरे दोस्तों से छोटा था। ऐसा माना जाता है कि वह भी एदोम से था। एलीहू एलीफज, बिल्दद और सोपर से नाराज था। उन्होंने अय्यूब को पूरी तरह से उत्तर नहीं दिया था या यह नहीं दिखाया था कि अय्यूब कैसे गलत था। एलीहू को लगा कि अय्यूब का परमेश्वर से सवाल पूछना गलत था। उसे लगा कि अय्यूब मानता था कि वह सही है और परमेश्वर गलत हैं। इससे एलीहू नाराज हो गया। लेकिन अय्यूब के कष्टों के बारे में उसने जो कहा दिया वह दूसरों के जैसा ही था। एलीहू मानता था कि परमेश्वर ने अय्यूब को सुधारने के लिए उसे कष्ट सहने दिया। इस कष्ट को अय्यूब को पाप करने से रोकने के लिए एक चेतावनी के रूप में देखा गया। एलीहू को लगा कि इससे अय्यूब को उसके पापों के लिए मौत की सजा से बचाया जा सकता है। एलीहू समझता था कि परमेश्वर कभी भी कुछ बुरा, गलत या अनुचित नहीं करते हैं। इसलिए उसे लगा कि अय्यूब का यह सोचना गलत था कि परमेश्वर ने उसके साथ अनुचित व्यवहार किया। उसे लगा कि इससे पता चलता है कि अय्यूब घमंड से भरा हुआ था। एलीहू समझ गया कि परमेश्वर के पास हर चीज़ पर पूरा अधिकार है। परमेश्वर सृष्टिकर्ता है जिसने दुनिया और उसमें मौजूद हर चीज़ को बनाया है। परमेश्वर ही एकमात्र हैं जो दुनिया के जीवन को बनाए रख सकते हैं।
एलीहू के लिए, इसका मतलब था कि लोग परमेश्वर के किसी काम को करने के कारणों को नहीं समझ सकते हैं। इसलिए उसने सोचा कि लोगों को परमेश्वर के कारणों के बारे में सवाल नहीं पूछने चाहिए।

अय्यूब 38:1–40:5

अय्यूब को लगा कि परमेश्वर उसकी बात नहीं सुनेंगे। इससे पहले अय्यूब ने कहा था कि उसे लगता है कि परमेश्वर उसे कुचलने के लिए तूफ़ान भेजेगा। अय्यूब को लगा कि अगर वह परमेश्वर को पुकारेगा तो परमेश्वर ऐसा करेगा। इसके बजाय, परमेश्वर ने बहुत ध्यान से उसकी बात सुनी। परमेश्वर ने अय्यूब, एलीपज, बिल्दद, सोपर और एलीहू की हर बात सुनी। अय्यूब को तूफान से कुचलने के बजाय, परमेश्वर ने तूफान में से अय्यूब से बात की। परमेश्वर ने अय्यूब के पूछे गए सवालों का जवाब नहीं दिया। उन्होंने अय्यूब को यह नहीं बताया कि लोग क्यों पीड़ित होते हैं। परमेश्वर ने यह नहीं बताया कि शैतान ने अय्यूब की परीक्षा का सुझाव दिया था। इसके बजाय, परमेश्वर ने अय्यूब से कई सवाल पूछे। परमेश्वर ने पूछा कि अय्यूब क्या क्या कर सकता है। फिर परमेश्वर ने उन चीजों को बताया जो वह कर सकते हैं। परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की हर चीज को बनाया। वह यह सुनिश्चित करते हैं कि जो उन्होंने बनाया है वह उसी तरह काम करे जैसा वह चाहते हैं। इसमें भूमि, पानी, आकाश, तारे और पशु शामिल हैं। परमेश्वर सभी पशुओं की देखभाल करते हैं। इसमें वे पशु भी शामिल हैं जो मनुष्यों द्वारा पाले नहीं जाते हैं। परमेश्वर ने आकाश, पृथ्वी और पशुओं के बारे में बहुत कुछ कहा। जिस तरह से उन्होंने उनके बारे में बात की उससे अय्यूब को कुछ महत्वपूर्ण समझ में आया। मनुष्य केवल परमेश्वर की सृष्टि का एक हिस्सा हैं। एक मनुष्य होने के कारण, अय्यूब परमेश्वर की सृष्टि के बारे में सब कुछ नहीं समझ सकता था। अय्यूब यह नहीं समझ सकता था कि सृष्टि की देखभाल के लिए क्या-क्या आवश्यक है। अय्यूब परमेश्वर की योजनाओं को नहीं समझ सकता था। अय्यूब यह नहीं समझ सकता था कि परमेश्वर ने जो किया उसके पीछे क्या कारण थे। और अय्यूब परमेश्वर का काम परमेश्वर से बेहतर नहीं कर सकता था। अय्यूब का परमेश्वर को पहला उत्तर चुप रहना था।

अय्यूब 40:6–42:6

परमेश्वर को दिए अपने दूसरे उत्तर में अय्यूब ने एक महत्वपूर्ण बात पहचानी। जब वह अपने मित्रों से बात कर रहा था, तो उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह किस बारे में बात कर रहा था। उसने ऐसी चीज़ों के बारे में बात की थी जो उसके लिए जानना बहुत ही अद्‌भुत था। इसका मतलब है कि वे ऐसी चीज़ें थीं जिन्हें मनुष्य नहीं समझ सकते हैं। इसे पहचानने से अय्यूब विनम्र हो गया। अय्यूब ने कहा कि उसे खुद से नफ़रत है। इसका मतलब यह नहीं है कि अय्यूब सोचता था कि वह एक बुरा व्यक्ति है। इसका मतलब यह नहीं है कि उसे खुद से कोई प्यार नहीं था। इसका मतलब है कि वह अब परमेश्वर से बहस नहीं करना चाहता था। अय्यूब ने उसके साथ अन्याय करने के लिए परमेश्वर पर आरोप लगाना बंद कर दिया। परमेश्वर ने अय्यूब को दिखाया कि वह अपने सभी प्राणियों का कितना ख्याल रखते हैं। अय्यूब को समझ में आ गया कि वह परमेश्वर के प्राणियों में से एक है। इसलिए अय्यूब समझ गया कि वह परमेश्वर पर भरोसा कर सकता है क्योंकि परमेश्वर उसके सृष्टिकर्ता थे। परमेश्वर ने खुद को अय्यूब को दिखाया था। जब अय्यूब ने परमेश्वर को सुना और समझा, तो उसने देखा कि परमेश्वर उसके भरोसे के योग्य थे।

अय्यूब 42:7–17

एलीपज, बिल्दद और सोपर ने परमेश्वर के बारे में ऐसी बातें कही थीं जो सच नहीं थीं। उन्होंने परमेश्वर द्वारा अय्यूब को परीक्षा में डालने के कारणों के बारे में मूर्खतापूर्ण बातें कहीं

अय्यूब *42:7–17*

थीं। परमेश्वर इस बात से नाराज थे। जब उन्होंने बलिदान दिया और अय्यूब ने उनके लिए प्रार्थना की, तो परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया। परमेश्वर ने अय्यूब को अपना सेवक कहा। इसका मतलब था कि अय्यूब ने वह काम किया जो परमेश्वर ने उसे करने के लिए दिया था। परमेश्वर ने कहा कि अय्यूब ने परमेश्वर के बारे में जो कुछ कहा था वह सच था। इसमें वे प्रश्न शामिल हैं जो अय्यूब ने पूछे थे। इसमें अय्यूब का दुखी, क्रोधित और भ्रमित होने के बारे में बात करना शामिल है। इसमें अय्यूब का परमेश्वर को देखने और उनसे आमने-सामने बात करने की लालसा शामिल है। परमेश्वर ने अय्यूब के बारे में जो कहा उससे पता चलता है कि अय्यूब शैतान द्वारा सुझाई गई परीक्षा में सफल हुआ। अय्यूब ने परमेश्वर का सम्मान करना जारी रखा। उसने परमेश्वर का सम्मान तब भी किया जब ऐसा लग रहा था कि परमेश्वर उसके जीवन में कुछ भी आशीष नहीं दे रहे हैं। जब परीक्षा समाप्त हो गई तो अय्यूब के साथ फिर से सब कुछ बहुत अच्छा हो गया। इस तरह अय्यूब के जीवन में उसके दोस्तों द्वारा कही गई एक बात सच हो गई। एलीपज, बिल्दद, सोपर और एलीहू ने जीवन की एक रीत पहचानी थी। वह रीत उन लोगों के बारे में था जो परमेश्वर की आज्ञा मानते और उनकी सेवा करते हैं। एलीहू ने कहा था कि जो ऐसा करते हैं उनके साथ सब कुछ अच्छा होगा। परमेश्वर ने अय्यूब को फिर से सफलता की आशिष दी और उसे परीक्षा से पहले की तुलना में अधिक दिया। उसने अय्यूब को उन सभी चीजों में अधिक दिया जिनकी उसके समय के लोग आशा कर सकते थे। इसमें कई बच्चे, पशुधन, सम्मान और लंबी आयु शामिल थी।